



DR. RADHACHARAN GUPTA

Dr. Radhacharan Gupta is a famous mathematician, who is known for his work of research and writing devoted to Ancient Indian Mathematics.

2. Born on 26th October, 1935 at Jhansi, Dr. Gupta did the B.Sc. in 1955 and M.Sc. (Mathematics) in 1957 from Lucknow University. He was awarded Ph.D. degree by the Ranchi University in 1971 and the Honorary Doctorate in Historical Science by the World University (USA) in 1986.

3. Dr. Gupta started his career as a mathematics teacher. He served as a lecturer at Lucknow Christian College from 1957 to 1958. After that he joined Birla Institute of Technology Mesra (BIT RANCHI) in 1958 and served in various positions. He was elected fellow of the National Academy of Sciences, India in 1991. He was elected a corresponding member in 1995 and then an effective member in 2002 of the International Academy of the History of Science, Paris (France). In 1972, Dr Gupta was appointed a member of the International Commission on History of Mathematics to represent India. He addressed the British Society for History of Mathematics. at Cambridge, England in 1977, when he attended the XVth International Congress of History on History of Science (Edinburgh). In 1979, he became the founder editor of the Ganita Bharati journal and served it for 27 years. By now he has published half a dozen books and about 500 articles of various types related to History of Mathematics. Two of his books have been published by NCERT, New Delhi, (1) Pracheen Bhartiya Ganit ki Aitihasik v Sanskritik Jhalkiyan, (2) Madhya Kalin Bhartiya Ganit ki Aitihasik v Sanskritik Jhalkiyan. In 2015, the 80th birthday of Dr. Radhacharan Gupta was celebrated at the Indian Institute of Technology (IIT) Bombay (Centre of History of Science and Technology) and the book 'Ganitananda' containing a collection of Radha Charan Gupta's works was released. He was President of the Association of the Mathematics Teachers of India from 1994 to 2010. He had participated in several National and International conferences and had presented invited papers.

4. For his significant work in promoting and popularising history of mathematics, Dr. Gupta was awarded the Kenneth O. May medal in 2009 by the International Commission on the History of Mathematics. In 1996, the distinguished service award was presented to him by the Vijnana Parishad of India (Society for Applications of Mathematics). In 1998, he won the Kunda Kunda Academy award for his work on Jain Mathematics. In July 29, 2022 he was awarded the 'Pearls of Bundelkhand' in Jhansi. The 'Mahaviracharya Puraskar (2021)' was awarded to him in September 2022 by the Digambar Jain Trilok Shodh Sansthan Hastinapur.



डॉ. राधाचरण गुप्त

डॉ. राधाचरण गुप्त एक प्रसिद्ध गणितज्ञ हैं, जिन्हें प्राचीन भारतीय गणित आधारित शोध और लेखन कार्य के लिए जाना जाता है।

2. 26 अक्टूबर, 1935 को झांसी में जन्मे, डॉ. गुप्त ने 1955 में लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.एससी. और 1957 में एम. एससी. (गणित) किया। उन्हें 1971 में रांची विश्वविद्यालय से पीएच.डी. और 1986 में वर्ल्ड यूनिवर्सिटी (यूएसए) द्वारा हिस्टोरिकल साइंस में डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई।

3. डॉ. गुप्त ने गणित के शिक्षक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने 1957 से 1958 तक लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में लेक्चरर के रूप में कार्य किया। उसके बाद वह 1958 में बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेसरा (बीआईटी रांची) चले गए और विभिन्न पदों पर कार्य किया। 1991 में उन्हें नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, भारत का फैलो चुना गया। उन्हें 1995 में इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ द हिस्ट्री ऑफ साइंस, पेरिस (फ्रांस) का दूरवर्ती सदस्य और फिर 2002 में स्थायी सदस्य चुना गया। वर्ष 1972 में, डॉ. गुप्त को भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए इंटरनेशनल कमीशन ऑन हिस्ट्री ऑफ मैथेमेटिक्स का सदस्य नियुक्त किया गया। वर्ष 1977 में उन्होंने 15वीं इंटरनेशनल काँग्रेस ऑन हिस्ट्री ऑफ साइंस (एडिनबरा) में भाग लेते हुए कैम्ब्रिज, इंग्लैंड में ब्रिटिश सोसायटी फॉर हिस्ट्री ऑफ मैथेमेटिक्स को संबोधित किया। 1979 में, वह 'गणित भारती' पत्रिका के संस्थापक संपादक बने और 27 वर्ष तक इस दायित्व का निर्वहन किया। अब तक उनकी आधा दर्जन पुस्तकें और गणित के इतिहास से संबंधित विभिन्न प्रकार के लगभग 500 लेख प्रकाशित हो चुके हैं। एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा उनकी दो पुस्तक प्रकाशित हुई हैं, (1) प्राचीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक झलकियां, (2) मध्यकालीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक झलकियां। 2015 में, राधाचरण गुप्त का 80वां जन्मदिन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बॉम्बे (विज्ञान और प्रौद्योगिकी इतिहास केंद्र) में मनाया गया। उनका रचना संग्रह 'गणितानंद' का विमोचन किया गया। वह 1994 से 2010 तक एसोसिएशन ऑफ मैथेमेटिक्स टीचर्स ऑफ इंडिया के अध्यक्ष थे। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया था और विशेष आलेख प्रस्तुत किए थे।

4. गणित के इतिहास को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने में उनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए, डॉ. गुप्त को इंटरनेशनल कमीशन ऑन हिस्ट्री ऑफ मैथेमेटिक्स द्वारा 2009 में केनेथ ओ. मे मेडल से सम्मानित किया गया था। वर्ष 1996 में, भारतीय विज्ञान परिषद (गणित अनुप्रयोग सोसायटी) द्वारा उन्हें विशिष्ट सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया था। वर्ष 1998 में, जैन गणित पर उनके काम के लिए उन्हें कुंडाकुंडा अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। 29 जुलाई, 2022 को उन्हें झांसी में 'बुंदेलखंड रत्न' सम्मान प्रदान किया गया। सितंबर 2022 में दिगंबर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा उन्हें 'महावीराचार्य पुरस्कार (2021)' प्रदान किया गया।